कुमार हर्ष

हर दिन नई प्रेरक कथाः प्रार्थना सभा में बच्चों को कहानी सुनाते शिवनारायण

अनूठा किस्सागो

विनम्र भाव और कम बोलने वाले प्रधानाचार्य ने पांच साल में 500 कहानियां कह रिकॉर्ड रचा

■ कुमार हर्ष

इस शख्स ने 5 साल में 500 कहानियां कह दी हैं. इस नजरिए से उनसे बड़ा किस्सागो शायद ही कोई हो. पर यह शिवनारायण सिंह के सामने कह दें तो विनम्रता भाव से लदे, कम बोलने वाले इस शख्स की जुबान ज्यादा चुप हो जाएगी. उनके नजदीकी हैरानी जताते हैं कि सीमित सामाजिक सरोकार वाले इस चुप्पे व्यक्ति को रोज सवेरे ऐसा क्या हो जाता है कि उनकी जुबान निर्झर झरने की तरह बहने लगती है.

46 वर्षीय इकहरी काया वाले शिवनारायण पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया शहर में एक इंटरमीडिएट कॉलेज के संचालक और प्रधानाचार्य हैं, जहां कोई 1,500 विद्यार्थी पढ़ते हैं. अनुशासन और पढ़ाई के लिए ख्यात इस कॉलेज में प्रार्थना का समय होते ही विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों में उत्सुकता उमड़ने लगती है. सब नजरें प्रधानाचार्य के चेहरे पर होती हैं, जिस पर अजीब तनाव दिखता है, पर सिर्फ उनका वाक् निकलने तक. और अगले 10–12 मिनट ऐसी प्रेरक कथा धारा में डूबने-उतराने वाले होते हैं, जिनका असर बच्चों के चेहरे पर साफ दिखता है. यह सिलसिला तो दशक भर से चल रहा है, पर कुछ शिक्षकों ने पांच वर्ष पहले उनके संबोधनों को 'रिकॉर्ड' करने के बाद फिर सुना तो प्रेरक भाव वाली इन मौलिक कहानियों को ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक पहुंचाने की सोची. शिवनारायण कहते हैं, "मैं खुद अवाक् था कि क्या ये सब मेरे मुंह से निकला है ?" फिर उनके प्रेस्टिज ट्यूटोरियल्स के शिक्षकों-कर्मियों ने उन्हें इसे पुस्तकाकार देने के लिए तैयार कर लिया.

हैरत नहीं कि 5 साल में उनके प्रेरक संबोधनों के चार संग्रह आ चुके हैं. प्रत्येक में 100 कथाएं हैं. 5वां संग्रह इसी माह आने वाला है. बुद्ध, ईसा, रामकृष्ण परमहंस जैसी विभूतियों और मौन, आशीर्वाद, साहस, सोना, बांसुरी, चेतावनी, जिजीविषा सरीखे शीर्षकों वाली ये कहानियां मौलिकता ही नहीं पठनीयता की कसौटी पर भी शानदार हैं. लखनऊ के सिटी मॉन्टेसरी स्कूल के प्रबंधक और ख्यातिलब्ध शिक्षाविद् जगदीश गांधी कहते हैं, "इस अनूठे प्रयास ने यह पक्का कर दिया कि स्कूल की प्रार्थना सभा प्रधानाचार्य की कक्षा होती है." इन पुस्तकों पर सैकड़ों प्रशंसात्मक पत्र तो मिले ही. तीन प्रमुख प्रकाशकों पुस्तक महल, राजकमल और प्रभात प्रकाशन की ओर से उन्हें छापने के प्रस्ताव भी शिवनारायण के काम की तारीफ ही है. दरअसल पिछली दो बार से नई दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में उनकी किताबों की अच्छी बिक्री ने उन्हें चर्चा के नए क्षितिज मुहैया कराए हैं.

ये उपलब्धियां किसी को भी वाचाल बना सकती हैं. पर गणित के इस परास्नातक के चेहरे पर कोई उत्साह नहीं दिखता. उनकी पत्नी शिवा सिंह कहती हैं, "ये तभी मुखर होते हैं जब कोई विद्यार्थी या अभिभावक इनसे इन कहानियों पर बात करता है." इसीलिए तो कई बार व्यस्तताओं के चलते वे सुबह की सभा नहीं लेते तो अभिभावक फोन से उनकी कुशल-क्षेम पूछते हैं.

तो क्या ऐसी और इतनी प्रेरक कथाओं के लिए वे कोई खास तैयारी करते हैं ?जवाब में सिर हिलाते हुए वे कहते हैं, "नहीं. मेरे दिमाग में सिर्फ दो बातें चलती रहती हैं कि ऐसी बात ही कहनी है जो छात्र-छात्राओं दोनों के सामने कह सकूं और दूसरी यह कि उस कथा में नकारात्मकता लेश मात्र भी न हो, मैं सिर्फ यही करता हूं. बाकी ईश्वर कराते हैं." ■